Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2021, VOL-9/47

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी भाषा एवं मीडिया का अंतः संबंध

अनीता रानी, Ph. D.

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सनातन धर्म महिला महाविद्यालय, नरवाना

Paper Received On: 25 SEPT 2021

Peer Reviewed On: 30 SEPT 2021

Published On: 1 OCT 2021

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

14 सितम्बर 1949 को संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा मिला। साहित्य, फिल्म, कला, संस्कृति, संचार, बाजार, शिक्षण इत्यादि सभी क्षेत्रो में हिन्दी ने अपनी महता कायम की है। यह भारत के करोड़ों लोगों द्वारा बोली व समझी जाती है। हिन्दी भारत की आत्मा है। आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के युग में हिन्दी का महत्त्व बढ़ा है। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम तथा भारत के पुनर्जागरण में हिन्दी को सांस्कृतिक एकता की कड़ी माना जाता है, वर्तमान समय में भी हिन्दी पूरे विश्व के देशों में एक सांस्कृतिक कड़ी बनने का काम कर रही है। विश्व के कई छोटे, बड़े देशों में प्रवासी भारतीयों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। दुनियां के अनेक देशों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में भारतीय मूल के नागरिकों और हिन्दी भाषा की उपस्थिति अब प्रभावशाली मानी जा रही है। आज हिन्दी का स्वरुप वैश्विक हो चला है, वह अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत कर रही है, साथ ही वह अपने स्वरुप को निरन्तर परिष्कृत भी कर रही है।

यदि हम वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का प्रयोग करने वालों की स्थिति का अवलोकन करे तो देखते हैं कि वर्ष 1952 में हिन्दी विश्व में पांचवे स्थान पर थी। जबकि 1980 ई0 के आस-पास वह चीनी और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गई। चीनी, स्पेनी के बाद विश्व में तीसरे स्थान पर बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। हिन्दी विश्व के 73 देशों में अपना स्थान बना चुकी है। अभी हाल ही में 'एथ्नोलॉग' पत्रिका ने 18 फरवरी, 2020 को दुनियां की जीवित भाषाओं पर अपना वार्षिक डाटाबेस प्रकाशित किया जिसमें उसने हिन्दी को दुनियां की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बताया है। आज दुनियां में लगभग 45 से अधिक देशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन व शिक्षण जारी है। विश्व भर के अनेक देशों में जहां हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है, उनकी एक लम्बी सूची है। कुछ प्रमुख नामों में हम अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, इंडोनेशिया, इटली, कनाडा, कोरिया, जर्मनी, जापान, डेन्मार्क, थाईलैण्ड, नाइजीरिया, फ्रांस, फिनलैण्ड, ब्राजील, बेल्जियम, रूस, वियतनाम, सिंगापुर, स्पेन, स्विटजरलैण्ड, स्वीडन, हांगकांग, हालैण्ड, सोमालिया, मंगोलिया, श्रीलंका, अफगानिस्तान, पोलैण्ड, चीन, स्पेन, नार्वे, कोलंबिया, दक्षिण अफ्रीका, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तुर्की, न्यूजीलैण्ड, सऊदी अरब, कुवैत, ईरान, डेन्मार्क इत्यादि देशों का नाम ले सकते हैं।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

हिन्दी के वैश्विक सन्दर्भ में डॉ. सुरेश माहेश्वरी लिखते हैं- ''आज विश्व में भारत ने अपनी पहचान बना ली है। भारत एक स्वतन्त्र जनतान्त्रिक राष्ट्र है। गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों का मुखिया भारत है। सार्क परिषद का प्रणेता और संस्कृति की दृष्टि से भी वह विश्व का पथ प्रदर्शक और अगुवा है। ऐसे भारत की भाषा हिन्दी है। इसलिए यदि भारत से निकटता बनानी है तो हमें हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन को महत्त्व देना चाहिए।'अमेरिका जो आज उन्नत टैक्नोलोजी, बेहतरीन शिक्षा, संचार के क्षेत्र में दुनियां में अग्रणी है वहां भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश ने राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने देशवासियों को हिन्दी, फारसी, अरबी, चीनी व रूसी भाषाएं सीखने के लिए कहा। अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्पष्ट घोषणा करते हुए कहा, ''हिन्दी, ऐसी विदेशी भाषा है, जिसे 21वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिको को सीखना चाहिए।" अमेरिकन राष्ट्रपति द्वारा हिन्दी सीखने में रूचि का प्रदर्शन निश्चित रूप से भारत के लिए गौरव की बात है।

अन्तराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की वर्तमान स्थिति काफी मजबूत है। भले ही इसका अतीत काफी संघर्ष से भरा हुआ रहा है परन्तु इसका भविष्य स्वर्णिम है। आज हिन्दी की स्थिति वैश्विक स्तर पर सम्मानजनक व प्रगतिवान है। सैंकडों देशों में भारतीय प्रवासी निवास करते हैं। जिस देश में भारतीय मूल के प्रवासी हैं वे किसी न किसी रूप में हिन्दी का प्रयोग करते हैं। प्रवासी भारतीयों की संख्या करोड़ों में है और इन सबका हिन्दी से लगाव है। विदेशों में बसे भारतीय अपनी बोलचाल की भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग करते हैं। उनके रीति-रिवाज, रहन-सहन और अनुष्ठान में हिन्दी का किसी न किसी रूप में प्रभाव है। भारत से बाहर जाने वाले भारतीयों के चार वर्ग माने जाते हैं। इस सम्बन्ध में डॉ. हरीश नवल जी ने यह वर्गीकरण करते हुए लिखा है, ''प्रथम वर्ग में वे भारतवासी हैं जो ढाई हजार वर्ष पूर्व से धर्म-प्रचारकों के रूप में गए। द्वितीय वर्ग उन भारतीयों का है जो गिरमिटियों के रूप में (एग्रीमेंट या शर्त बन्दी प्रथा के अन्तर्गत) फिजी, त्रिनिडाड, गियाना, सूरीनाम, ग्वाटालूप, दक्षिणी अफ्रीका, मार्टिनी, जमैका आदि देशों में गए। तृतीय वर्ग में वे भारतीय हैं जो रोजी-रोटी कमाने अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि देशों में जा बसे। चतुर्थ वर्ग ऐसे भारतियों का रहा है जो शिक्षा, प्रशिक्षण, भारतीय राजकीय सेवा या विदेशी उपक्रमों में सेवा हेतु जाते हैं।" कहने का अभिप्राय यह है कि भारत के लोग चाहे किसी भी उद्देश्य से विदेशों में गए हैं वहां उन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत के लिए यह सचमुच गौरव की बात है कि विश्व के पौने दो सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भी अध्ययन का विषय है। यही नहीं विद्यालयी स्तर पर विश्व के अनेक देशों में एक हजार से अधिक स्कूलों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। जिनमें भारतीय बच्चों के साथ-साथ गैर भारतीय बच्चे भी हिन्दी की शिक्षा ग्रहण करते हैं।

हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है। इस भाषा में जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा व सुना जाता है। वैश्विक पटल पर हिन्दी की स्थिति मजबूत होने के पीछे एक कारण इसकी वैज्ञानिकता भी है। हिन्दी की शब्दावली उदारवादी है। इसमें अधिक भाषाओं के शब्दों के समाहार करने की अद्‌भूत क्षमता है। हिन्दी की लिपि देवनागरी है। देवनागरी ऐसी लिपि है जो विश्व लिपि बनने के योग्य है। अर्थ यह है कि जिस लिपि के पास अतुलनीय विश्व-कोश है और अद्वितीय विश्व-लिपि है, उसे विश्व भाषा का दर्जा मिलना ही चाहिए। डा॔0 महेश चन्द्र गुप्त के अनुसार,

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

‘‘हिन्दी एक समृद्ध भाषिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परम्परा की वाहिनी है। वह संस्कृत जैसी सम्पन्न भाषा की उत्तराधिकारिणी है, उदारशीला है, उसने ध्वनि और शब्द सम्पदा दोनो ही दृष्टियों से विभिन्न भारतीयों तथा विदेशी भाषाओं से असंख्य शब्दों को ग्रहण कर तथा अपनी भाषिक प्रकृति में उन्हें ढालकर अपने को समृद्ध किया है।’’

आज के वैश्वीकरण के युग में बाजार महत्त्वपूर्ण हो गया है। भारत की ओर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और बड़े उत्पादक देशों ने एक बड़े सम्भावित बाजार के रूप में देखा है। यदि भारत के साथ व्यवसायिक सम्बन्ध बढ़ाने हैं तो इसके लिए हिन्दी माध्यम अपनाना जरूरी है। इस वजह से भी दूसरे देशों का हिन्दी सीखने के प्रति आकर्षण बढ़ा है। उपभोक्तावाद के इस जमाने में इल्कट्रोनिक समाचार माध्यमों और मनोरंजन के चैनलों पर प्रसारित किए जा रहे विज्ञापनों, समाचार तथा शिक्षाप्रद कार्यक्रमों द्वारा भी हिन्दी के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ी है। आज देश के छोटे-बड़े औद्योगिक घराने और बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी अपने विज्ञापनों को जारी रखना आवश्यक समझ रही है। भारतीय खिलाड़ियों के बाहर जाने, विदेशी खिलाड़ियों का भारत में आकर खेलने, विदेशी छात्रों के भारत भ्रमण, शिक्षा अध्ययन इत्यादि के कारण भी हिन्दी की स्थिति दिन-प्रतिदिन और भी मजबूत हुई है। हिन्दी को विश्वपटल पर स्थापित करने के पीछे कई सरकारी, गैर-सरकारी, प्रवासी व भारतीयों की संस्थाओं, प्रचार संस्थाओं, साहित्यकारों, राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय सम्मेलनों, विश्व हिन्दी सम्मेलनों, व्यापारों, वाणिज्य, सूचना प्राद्यौगिकी, संचार माध्यमों, देशी व विदेशी स्वैच्छिक संस्थाओं, धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं, फिल्मों, टीवी धारावाहिकों व मीडिया का सराहनीय योगदान रहा है।

हिन्दी को विश्व पटल पर स्थापित करने में प्रिन्ट मीडिया व इलैक्ट्रोनिक मीडिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मीडिया हिन्दी को वैश्विक पटल पर स्थापित करने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विश्व में हॉलीवुड के बाद सिनेमा जगत का निरन्तर विस्तार हो रहा है। हिन्दी फिल्मों का अनुवाद विश्व की लगभग सभी भाषाओं में किया जा रहा है। यही स्थिति टीवी के सीरियलों की है। विकसित, अविकसित, विकासशील देशों में सभी जगह हिन्दी फिल्मों और सीरियलों की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। सिनेमा, गीत और धारावाहिकों के माध्यम से भी हिन्दी ने विदेशों में अपनी पहुँच और पहचान बनाई है। इन्टरनेट और मोबाइल के क्षेत्र में भी भारत पीछे नहीं है। इनके उपयोगकर्ताओं की आबादी तेजी से बढ़ रही है। ग्रामीण व आदिवासी इलाकों में भी इसका जाल फैल चुका है। अब हिन्दी के मनोरंजन और समाचार चैनलों की लोकप्रियता निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुकी है। समुद्रपारीय देशों में भी इनके दर्शकों की संख्या कम नहीं है। विकसित राष्ट्रों में भी भारत के प्रमुख हिन्दी चैनलों को देखा जा सकता है। हिन्दी के प्रमुख राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दैनिकों में अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण इन्टरनेट पर उपलब्ध हो रहे हैं। इस समय भारत के दस चोटी के दैनिकों के ऊपर के चार स्थानों पर हिन्दी के अखबार जमे हुए हैं।
आज विश्व में सबसे अधिक पढ़े जाने वाले समाचार-पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी भाषा के हैं। दक्षिण पूर्व एशिया, मॉरीशस, चीन, जापान, कोरिया, मध्य एशिया, खाड़ी देशों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा, अमेरिका तक हिन्दी कार्यक्रम, उपग्रह चैनलों द्वारा प्रसारित हो रहे हैं, जिनके दर्शकों का एक बड़ा वर्ग है। पिछले कुछ वर्षो से एफ एम रेडियो चैनलों के विकास से हिन्दी कार्यक्रमों का अपना श्रोता वर्ग भी बन गया है। हिन्दी आज नवीन प्राद्यौगिकी के रथ पर

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सवार होकर विश्वव्यापी बन रही है। मीडिया के रथ पर सवार होकर हिन्दी की वैश्वीकरण के विश्वविजय का उद्घोष हो चुका है। हॉलीवुड और बालिवुड के प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में हिन्दी को फिल्मों के माध्यम से पूरे विश्व में विस्तार और सम्मान मिला है। भारतीय हिन्दी चैनलों के कार्यक्रम दुनियां के अधिकांश देशों में देखे, सुने व पसन्द किये जाते है। इनकी लोकप्रियता असंदिग्ध है। न्यूजीलैण्ड में भारतीय मूल के लोगों ने हिन्दी कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए अपना दूरदर्शन और आकाशवाणी केन्द्र स्थापित किया हुआ है। इन जनसंचार माध्यमों ने हिन्दी के स्वरुप और विस्तार दोनो दृष्टियों से हिन्दी को वैश्विक बनाने में अहम भूमिका निभाई है। परम्परागत मीडिया के साथ-साथ अब हमारे सामने नया मीडिया भी हिन्दी को वैश्विक परिदृश्य देने में अपना सराहनीय योगदान दे रहा है। इस नये मीडिया को सोशल मीडिया के नाम से भी जाना जाता है। इसमें अखबार की तरह टैक्सट भी है और रेडियो की तरह ध्वनि भी। टेलीविजन और सिनेमा की तरह दृश्य और ध्वनि दोनों ही इस माध्यम में मिल जाती है। इस तरह यह एक विशिष्ट माध्यम बन जाता है। श्री राकेश कुमार अपने लेख 'नए मीडिया ने बदली हिन्दी की चाल'में इस नये मीडिया की हिन्दी की देन पर अपने विचार रखते हुए कहा है कि ''अखबार की ताकत उसके शब्द होते हैं। रेडिया की ताकत ध्वनि और सिनेमा तथा टेलीविजन की भाषा दृश्य होते है। आज आम आदमी मीडिया का मात्र उपभोक्ता ही नहीं अपितु वह मीडिया का उत्पादक भी है।''

आज सोशल मीडिया में हिन्दी का प्रयोग लोकप्रिय हो रहा है। मोबाइल पर हिन्दी एप्स की संख्या लगातार बढ़ रही है। यूनिकोड आ जाने से कम्प्यूटर में हिन्दी टाइपिंग की समस्या अब दूर हो गई है। प्राद्यौगिकी क्षेत्र में आई क्रान्ति के फलस्वरुप आज इन्टरनेट के माध्यम से हिन्दी का ई-पुस्तकालय, देश विदेश में हिन्दी पुस्तकों की खरीददारी, हिन्दी में विज्ञापन, हजारों स्वतन्त्र निःशुल्क ब्लॉग, नए प्रकाशनों की जानकारी जैसी अनेक सुविधाएं सरलता से उपलब्ध हो जाती हैं। तमाम बड़े चैनलों की हिन्दी वेबसाइट है। सभी ई-कामर्स की वेबसाइट चाहे वह स्नैपडील हो या फ्लिपकार्ट सभी मोबाइल एप्स हिन्दी में सुविधा देते हैं ताकि अंग्रेजी भाषा न जानने वाले खरीददार भी इन एप्स के माध्यम से खरीददारी कर सकें। इन सब तकनीकी प्रगतियों ने भी हिन्दी को वैश्विक धरातल पर पहुंचाने में अपना अहम योगदान दिया है।

निसन्देह हिन्दी का फलक वैश्विक स्तर पर विस्तृत हुआ है। हिन्दी में वह क्षमता है जो भारत देश ही नहीं अपितु विश्व के अनेक देशों को भी सांस्कृतिक एकता के सूत्र में पिरो सकती है। आज हिन्दी बाजार, व्यापार, संस्कार, संचार, सौहार्द की भाषा बनकर उभरी है। हिन्दी आज वैश्विक धरातल पर अपनी स्थिति को मजबूत बनाने में सफल हुई है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सभी भाषा-भाषियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वैश्विक फलक पर हिन्दी को स्थापित करने के लिए जहां एक ओर साहित्यकारों, सामाजिक संगठनों, प्रवासी भारतीयों, अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठियों, विश्व हिन्दी सम्मेलनों, प्रचार संस्थाओं इत्यादि का योगदान रहा है वहीं दूसरी ओर सूचना प्राद्यौगिकी, मीडिया, हिन्दी फिल्मों, गीतों, धारावाहिकों, पत्र-पत्रिकाओं, विज्ञापनों, बाजार, कम्प्यूटर, इन्टरनेट इत्यादि की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

सन्दर्भ

डॉ. सुरेश माहेश्वरी (सम्पादक), हिन्दी राष्ट्रभाषा से विश्व भाषा की ओर, पृ0 100
साहित्य अमृत, सितम्बर 2010, पृ0 39
राजभाषा भारती, अप्रैल-जून 2018, अंक-155, पृ0 79
वही, पृ0 34
गिरीश्वर मिश्र (प्रधान सम्पादक), बहुवचन, पृ0 200

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language